VOL- XI | ISSUE- XII | DECEMBER | 2024 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 8.02 | ISSN 2349-638x

विकसित भारत और पर्यावरण संरक्षण

डॉ. अजय सिहाग
सहायक आचार्य (भूगोल)
डी.ए.वी. कहलेज, श्रीगंगानगर

सारांष

विकसित भारत और पर्यावरण संरक्षण दो महत्वपूर्ण और परस्पर संबंधित मुद्दे हैं। एक ओर जहां विकास के माध्यम से देश की समृद्धि और सामाजिक कल्याण में वृद्धि होती है, वहीं दूसरी ओर यदि विकास का तरीका पर्यावरण को नुकसान पहुंचाता है, तो यह दीर्घकालिक रूप से देश की स्थिरता और भविष्य के लिए खतरे का कारण बन सकता है। इसलिए, यह आवश्यक है कि भारत के विकास को पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों के साथ जोड़ा जाए, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और संतुलित पर्यावरण सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य शब्दः- *पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता ,सतत विकास ,आर्थिक विकास ,औद्योगिकरण, शहरीकरण*

विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन-

विकास का मतलब केवल आर्थिक वृद्धि नहीं है, बल्कि सामाजिक समृद्धि, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और जीवनस्तर में सुधार भी है। लेकिन, यदि विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक शोषण किया जाए तो इससे पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। वनों की अंधाधुंध कटाई, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और जैव विविधता का संकट जैसी समस्याएं आज की प्रमुख पर्यावरणीय चिंताएँ हैं।

विकसित देशों ने इस समस्या को समझा और अपनी नीतियों में पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता दी है। भारत के लिए भी यह अत्यंत आवश्यक है कि वह अपने विकास को पर्यावरणीय नीतियों और सतत विकास के सिद्धांतों के तहत संचालित करे।

भारत में पर्यावरणीय चुनौतियाँ-

भारत में विकास की दिशा में कई सकारात्मक प्रयास किए गए हैं, लेकिन पर्यावरणीय संकट भी लगातार बढ़ता जा रहा है। कुछ प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएं निम्नलिखित हैंरू

(अ) वायु प्रदूषण-

विकसित भारत का सपना केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। वायु प्रदूषण, जो एक गंभीर पर्यावरणीय समस्या बन चुकी है, भारत में विकास की दिशा में एक बड़ी चुनौती प्रस्तुत करता है। बढ़ते औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और मोटर वाहनों की संख्या में वृद्धि के कारण वायु प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है, जिससे न केवल पर्यावरण पर असर पड़ रहा है, बल्कि लोगों के स्वास्थ्य पर भी गंभीर प्रभाव डाल रहा है।

वायु प्रदूषण के कारण-

१. औद्योगिकीकरण और फैक्ट्रियों का प्रभाव-

भारत में औद्योगिकीकरण तेजी से बढ़ रहा है। फैक्ट्रियाँ और औद्योगिक संयंत्र वायुमंडल में प्रदूषण फैलाने वाले गैसों जैसे सल्फर डाइअहक्साइड (SO_2), नाइट्रोजन अहक्साइड (NOx), और कार्बन मोनोअहक्साइड (CO) का उत्सर्जन करते हैं।

२. वाहन प्रदूषण–

शहरीकरण के साथ-साथ मोटर वाहनों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हो रही है। वाहनों से निकलने वाली धुंआ और गैसें, जैसे कि नाइट्रोजन अहक्साइड और पार्टिकुलेट मैटर (च्ड), वायु प्रदूषण के मुख्य कारणों में शामिल हैं।

३. कृषि गतिविधियाँ–

भारत में कृषि क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के कारण जलवायु पर असर डालने वाली गतिविधियाँ बढ़ रही हैं। विशेष रूप से धान की खेती में जलाने की प्रथा (स्ट्रह बर्निंग) वायु प्रदूषण का प्रमुख कारण है। इससे जहरीले गैसों का उत्सर्जन होता है, जो वायु को प्रदूषित करते हैं।

४. निर्माण कार्य और खनन–

शहरी विकास और निर्माण कार्यों में वृद्धि ने धूल और कण प्रदूषण में वृद्धि की है। इसके अलावा, खनन से निकलने वाली धूल भी वायु प्रदूषण का एक कारण बनती है।

५. घरेलू ईंधन का उपयोग–

ग्रामीण क्षेत्रों में लकड़ी, कोयला और अन्य पारंपरिक ईंधन जलाने से भी वायु प्रदूषण होता है। यह प्रदूषण मुख्य रूप से कार्बन डाइअहक्साइड (ब्व्२) और प्रदूषक कणों के रूप में फैलता है।

(ब) जलवायु परिवर्तन–

विकसित भारत का सपना तभी साकार हो सकता है जब हम अपने विकास के साथ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखें। जलवायु परिवर्तन, जो आज दुनिया भर के लिए एक गंभीर समस्या बन चुकी है, भारत के लिए भी एक बड़ी चुनौती है। जलवायु परिवर्तन का असर न केवल पर्यावरण, बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है। भारत जैसे विकासशील देश के लिए, जहां बढ़ती जनसंख्या, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण हो रहा है, जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को नियंत्रित करना और पर्यावरण संरक्षण को प्राथमिकता देना अत्यंत आवश्यक है।

जलवायु परिवर्तन के कारण–

१. मानवजनित गतिविधियाँ–

जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारणों में मानवजनित गतिविधियाँ जैसे औद्योगिकीकरण, जंगलों की अंधाधुंध कटाई, और जीवाश्म ईंधन का अत्यधिक उपयोग (कोयला, पेट्रोल, डीजल आदि) शामिल हैं। इन गतिविधियों से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ रहा है, जो पृथ्वी के तापमान को बढ़ा रहा है।

२. वृक्षों की कटाई–

वनों की अंधाधुंध कटाई के कारण कार्बन डाइअहक्साइड अवशोषित करने की क्षमता में कमी आ रही है। पेड़-पौधे जलवायु को स्थिर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

३. पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग–

भारत में ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने के लिए मुख्यतः कोयला और अन्य गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का इस्तेमाल किया जाता है। इससे बड़ी मात्रा में कार्बन डाइअहक्साइड और अन्य हानिकारक गैसों का उत्सर्जन होता है, जो जलवायु परिवर्तन का कारण बनते हैं।

४. कृषि और प्रदूषण–

जलवायु परिवर्तन में कृषि गतिविधियाँ भी भूमिका निभाती हैं, जैसे कि जलवायु परिवर्तन के कारण कृषि में अनियमितताएँ और भूमि के प्रयोग में परिवर्तन। साथ ही, कचरे का सही तरीके से निपटान न होना भी प्रदूषण का एक कारण है

(स) वनों की कटाई–

विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ते हुए, देश को अपने आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण के विषय में भी गंभीर कदम उठाने होंगे। वनों की कटाई एक ऐसी प्रमुख पर्यावरणीय समस्या है, जो न केवल जैव विविधता को प्रभावित करती है, बल्कि जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए भी खतरे की घंटी है। वनों का अंधाधुंध दोहन भारत की विकास यात्रा के मार्ग में एक गंभीर चुनौती बन चुका

है। इसलिए, वनों की कटाई को रोकने और पर्यावरण संरक्षण के उपायों को लागू करना भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए आवश्यक है।

वनों की कटाई के कारण-

१. औद्योगिकीकरण और शहरीकरण-

जैसे-जैसे भारत में शहरीकरण और औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया तेज हो रही है, वनों की ज़मीन का उपयोग आवासीय, वाणिज्यिक और औद्योगिक परियोजनाओं के लिए किया जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप जंगलों की अंधाधुंध कटाई हो रही है।

२. कृषि के लिए भूमि का उपयोग-

किसानों द्वारा अधिक भूमि की आवश्यकता के कारण वनों की कटाई की जाती है। विशेष रूप से खेती के लिए जंगलों को साफ करना और वनस्पति को नष्ट करना एक सामान्य प्रथा बन गई है।

३. गैर-नवीकरणीय संसाधनों का शोषण-

वनों का उपयोग लकड़ी, इमारती लकड़ी, इंधन के रूप में और अन्य वन उत्पादों के लिए किया जाता है। इन संसाधनों का अत्यधिक शोषण वनों की स्थिरता को प्रभावित करता है।

४. घरेलू उपयोग और जीवनयापन-

ग्रामीण क्षेत्रों में लकड़ी, चारकोल और अन्य पारंपरिक ईंधन के लिए जंगलों का शोषण किया जाता है। इससे वनों की कटाई होती है, जिससे पर्यावरणीय संकट उत्पन्न होता है।

५. भ्रष्टाचार और वन संपत्ति की अवैध कटाई-

कई बार अवैध रूप से वनों की कटाई की जाती है, खासकर जहां वन संरक्षण नीतियाँ प्रभावी नहीं होतीं।

(द) जल संकट-

भारत में जल संकट एक गंभीर समस्या बन चुकी है, जो न केवल ग्रामीण क्षेत्रों, बल्कि शहरी इलाकों में भी बढ़ती जा रही है। जल के अत्यधिक उपयोग, उसके अनुचित प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन के कारण देश में पानी की उपलब्धता में भारी कमी आ रही है। भारत जैसे विकासशील और तेजी से बढ़ते हुए देश के लिए जल संकट एक चुनौतीपूर्ण मुद्दा बन चुका है। विकसित भारत का सपना तभी साकार हो सकता है जब हम जल संकट के समाधान पर ध्यान केंद्रित करें और जल संरक्षण को प्राथमिकता दें।

जल संकट के कारण-

१. जलवायु परिवर्तन-

जलवायु परिवर्तन के कारण बारिश के पैटर्न में असमानता आ रही है। कहीं अत्यधिक बारिश हो रही है, तो कहीं सूखा पड़ रहा है। यह जल स्रोतों की अस्थिरता का कारण बन रहा है और जल संकट को बढ़ा रहा है।

२. जलाशयों का अत्यधिक शोषण-

कृषि, उद्योग और घरेलू उपयोग के लिए जलाशयों का अत्यधिक शोषण किया जा रहा है। पानी का अव्यवस्थित उपयोग, जैसे कि सिंचाई के लिए ज्यादा पानी का खर्च करना, जल संकट को और गंभीर बना रहा है।

३. अवसरों का अनुपयुक्त वितरण-

भारत में जल स्रोतों का वितरण असमान है। देश के कुछ हिस्सों में पानी की अधिकता है, जबकि कुछ हिस्से सूखा और जल संकट का सामना कर रहे हैं। यह असमानता जल संकट को बढ़ाती है।

४. प्रदूषण-

जल स्रोतों के प्रदूषण ने जल संकट को और विकराल बना दिया है। कारखानों और औद्योगिक क्षेत्रों से निकलने वाला प्रदूषित जल नदियों और झीलों को दूषित कर देता है, जिससे पीने योग्य पानी की कमी हो जाती है।

५. जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण-

भारत की बढ़ती जनसंख्या और तेजी से शहरीकरण के कारण जल की मांग में लगातार वृद्धि हो

रही है। अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में जल आपूर्ति पर दबाव बढ़ता जा रहा है।

६. जल प्रबंधन में कमी–

जल संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन न होने के कारण जल की बर्बादी हो रही है। पुराने जल वितरण प्रणाली, जल पुनर्चक्रण की कमी और जल संरक्षण के उपायों की अनुपस्थिति भी जल संकट के मुख्य कारण हैं।

(य) कचरे की समस्या–

विकसित भारत का सपना तभी साकार हो सकता है जब हम पर्यावरण संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाएँ। भारत में तेजी से बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण, और औद्योगिकीकरण के कारण कचरे की समस्या एक गंभीर चुनौती बन चुकी है। कचरा न केवल हमारे पर्यावरण के लिए खतरा है, बल्कि यह हमारे स्वास्थ्य और जीवनशैली पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। कचरे का सही तरीके से प्रबंधन और निपटान न होने से पर्यावरणीय असंतुलन, जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। इस समस्या का समाधान ढूँढ़ना और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता बन चुकी है।

कचरे की समस्या के कारण–

१. तेजी से बढ़ती जनसंख्या–

भारत में बढ़ती जनसंख्या के कारण कचरे का उत्पादन भी बहुत अधिक हो रहा है। अधिक जनसंख्या के कारण घरेलू, औद्योगिक और अन्य स्रोतों से कचरा अधिक मात्रा में उत्पन्न होता है।

२. अधूरी कचरा प्रबंधन प्रणाली–

कचरे के संग्रहण, परिवहन और निपटान के लिए प्रभावी और व्यवस्थित प्रणाली का अभाव है। अधिकांश शहरों और गांवों में कचरे का निपटान या तो अव्यवस्थित तरीके से होता है, या फिर खुले स्थानों पर कचरा डाल दिया जाता है, जिससे प्रदूषण और गंदगी फैलती है।

३. प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग–

प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग और उसका अनुपयुक्त निपटान कचरे की समस्या को बढ़ा रहा है। प्लास्टिक सामग्री लंबे समय तक पर्यावरण में रहकर प्रदूषण फैलाती है और प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान पहुँचाती है।

४. औद्योगिकीकरण और शहरीकरण–

शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण कचरे की मात्रा में लगातार वृद्धि हो रही है। फैक्ट्रियाँ, कारखाने और निर्माण स्थलों से भारी मात्रा में कचरा उत्पन्न होता है, जिसका सही तरीके से प्रबंधन नहीं किया जाता है।

५. सार्वजनिक जागरूकता की कमी–

कचरे के सही निपटान के प्रति लोगों में जागरूकता की कमी है। कई लोग कचरे को सड़क पर या खुले स्थानों पर फेंक देते हैं, जो पर्यावरणीय समस्या को और बढ़ाता है।

विकसित भारत के लिए पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता–

१. सतत विकास की अवधारणा–

सतत विकास का अर्थ है कि हम विकास के प्रयासों में पर्यावरण को नष्ट किए बिना समाज की वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करें। भारत को विकास की दिशा में इस अवधारणा को अपनाना होगा।

२. नवीकरणीय ऊर्जा–

भारत को अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल विद्युत ऊर्जा का अधिकतम उपयोग करना चाहिए। इससे कोयला, गैस और तेल जैसे पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भरता कम होगी, जो पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं।

३. ग्रीन टेक्नोलहजी और पर्यावरणीय नीतियाँ–

ग्रीन टेक्नोलहजी का विकास और उसके व्यापक उपयोग से प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकता है।

साथ ही, प्रभावी पर्यावरणीय नीतियाँ और उनके कठोर क्रियान्वयन से पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण संभव है।

४. वृक्षारोपण और जंगलों का संरक्षण–

जंगलों की कटाई को रोकने और वृक्षारोपण की गति को तेज करने से पर्यावरण संतुलित रहेगा। वृक्षों से अहृक्सीजन की आपूर्ति होती है और वे कार्बन डाइअहृक्साइड को अवशोषित करते हैं, जिससे ग्लोबल वार्मिंग को कम किया जा सकता है।

५. प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग–

जल, वन, और खनिजों जैसे प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करके हम उनके संरक्षण में मदद कर सकते हैं और साथ ही विकास की गति को बनाए रख सकते हैं।

निष्कर्ष–

विकसित भारत का सपना तभी पूरा किया जा सकता है जब हम पर्यावरण संरक्षण को अपने विकास के साथ जोड़ें। यह एक कठिन लेकिन आवश्यक कार्य है। इसके लिए सरकार, नागरिक समाज, उद्योग और प्रत्येक व्यक्ति को मिलकर काम करना होगा। यदि हम पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हुए विकास करते हैं, तो हम न केवल एक समृद्ध भारत की कल्पना कर सकते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और सुरक्षित वातावरण भी सुनिश्चित कर सकते हैं।

संदर्भ–

१.भारतीय पर्यावरण मंत्रालय की रिपोर्ट
२.यूनाइटेड नेशन्स डेवेलपमेंट प्रोग्राम (UNDP) द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट
३.भारत सरकार की सतत विकास पर नीति